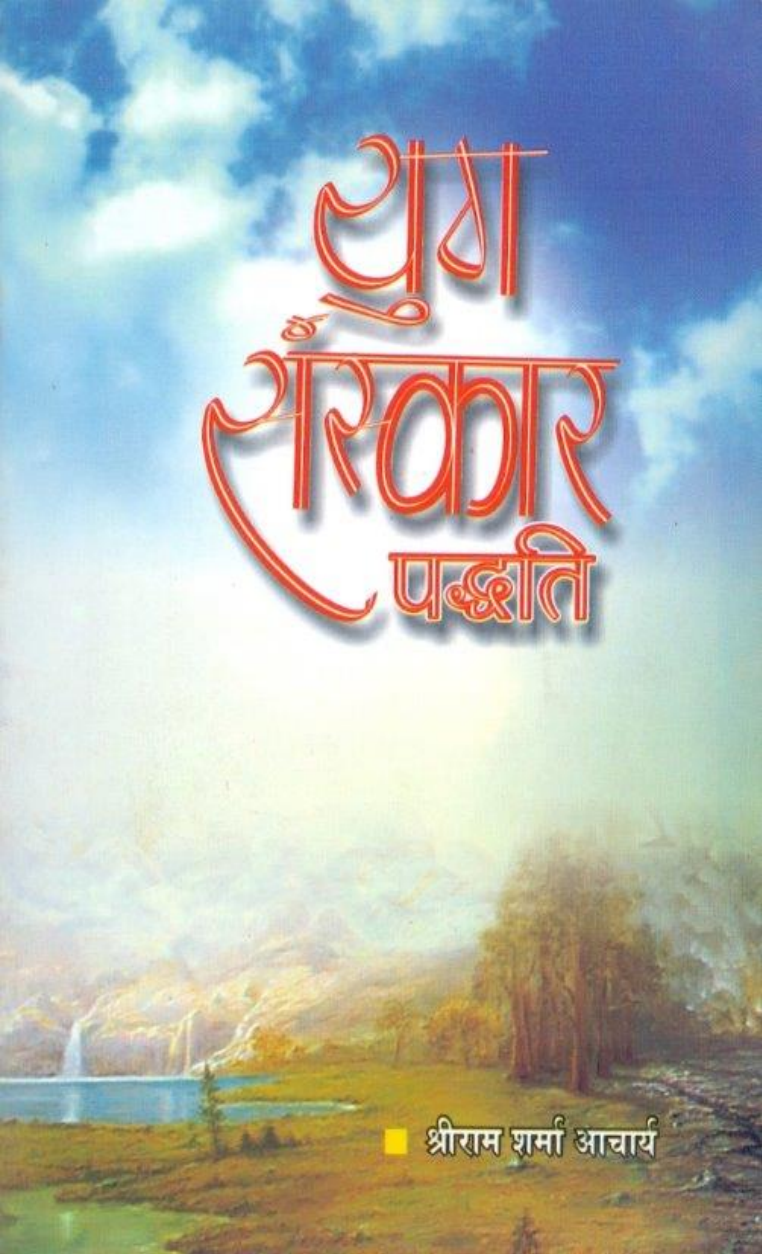
युग संस्कार पद्धति
श्रीराम शर्मा आचार्य

युग संस्कार पद्धति

प्राक्कथन

**

परम पूज्य गुरुदेव ने उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए, सुसंस्कारी व्यक्तित्वों के निर्माण एवं विकास की अनिवार्य आवश्यकता बार-बार बतलायी है। व्यक्तित्व निर्माण के क्रम में धर्म तंत्र से लोकशिक्षण के अन्तर्गत संस्कार प्रक्रिया का असाधारण महत्त्व है। अभियान को गति देने के सूत्रों पर चर्चा करते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा था-

''अगले ही चरण में समाज में संस्कार अभियान तीव्रतर होगा। समाज की माँग को पूरी करने के लिए बड़ी संख्या में संस्कार-सम्पन्न कराने वाले पुरोहितों की आवश्यकता पड़ेगी। दैवी चेतना के प्रभाव से बड़ी संख्या में प्रतिभा-सम्पन्नों, भावनाशीलों में ऐसी उमंगें जागेंगी, जो उन्हें थोड़े या बहुत समय के लिए पुरोहितों के गरिमामय कार्य में प्रवृत्त होने के लिए बाध्य करेंगी। वे सांसारिक व्यस्तता, लोभ-मोह से ऊपर उठकर इस कार्य के लिए समय और श्रम लगायेंगे, किन्तु संस्कृत भाषा का पूर्वाभ्यास न होने से उन्हें प्रचलित पद्धति से कर्मकाण्ड कराने में बाधा पड़ेगी। इस बाधा को दूर करके उत्पन्न होने वाली माँग के अनुरूप, बड़ी संख्या में सेवा भावी पुरोहितों को तैयार किया जा सकेगा।''

उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने कर्मकाण्ड के लिए श्लोक-परक मंत्रों के स्थान पर सूत्र-मन्त्रों के प्रयोग की विधा पुनः विकसित कर दी। प्राचीन काल में सूत्र पद्धति बहुत लोकप्रिय रह चुकी है। कालान्तर में समय के प्रभाव से श्लोक पद्धति प्रचलन में आ गयी। अब युग की माँग के अनुरूप सूत्र पद्धति को पुनः स्थापित करना आवश्यक हो गया है। इसीलिए पूज्य गुरुदेव ने अगले चरण के रूप में दीपयज्ञ तथा संस्कारों के लिए सूत्र पद्धति विकसित करके दी है।

प्रथम प्रयोग के रूप में सामूहिक दीप यज्ञों के लिए युग यज्ञ-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पद्धति असामान्य लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। अब विवाह, अन्त्येष्टि एवं मरणोत्तर (श्राद्ध) संस्कारों के अतिरिक्त अन्य सभी संस्कारों को, सूत्र मन्त्रों को प्रधानता देते हुए संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। आवश्यकता के अनुसार विवेकपूर्वक सुगम श्लोकों का प्रयोग भी उचित स्थानों पर किया गया है। प्रयुक्त श्लोक भी बहुत प्रचलित तथा सुगम हैं, इसलिए संस्कृत न जानने वाले सुशिक्षित परिजन भी थोड़े से अभ्यास से कर्मकाण्ड सम्पन्न करने में सफल होंगे।

क्रम व्यवस्था-कोई भी संस्कार कराने के लिए समय और परिस्थितियों के अनुरूप यज्ञ अथवा दीपयज्ञ के साथ संस्कार कराये जा सकते हैं। प्रारम्भ में क्रमशः मंगलाचरण, षट्कर्म, तिलक एवं रक्षा सूत्र के बाद कलशपूजन, देवपूजन, स्वस्तिवाचन आदि कर्मकाण्ड कराये जायें। इसके बाद संस्कार के विशेष कर्मकाण्ड सम्पन्न करायें। प्रत्येक क्रिया से जुड़े सूत्र हिन्दी में समझाकर संस्कृत में दुहरवाये जायें, क्रिया के समय निर्धारित मंत्र बोले जायें। तदुपरान्त अग्निस्थापन करवाकर गायत्री मंत्र की आहुतियाँ दी जायें। गायत्री मंत्र की आहुतियों के बाद ५ आहुतियाँ महामृत्युञ्जय मंत्र से दी जायें।

पूर्णाहुति के पूर्व संस्कार विशेष का सङ्कल्प कराया जाए। प्रत्येक संस्कार के साथ जुड़े दायित्वों को पूरा करने का व्रत यजमान परिवार के परिजनों को दिलाये जाने की व्यवस्था संकल्प क्रम में रखी गयी है। सङ्कल्प बुलवाकर पूर्णाहुति सम्पन्न करायी जाए। यदि दीप-यज्ञ है, तो सङ्कल्प के अक्षत-पुष्प दीप पूजास्थली पर अर्पित कराये जायें। यज्ञ हो, तो सङ्कल्प करवाकर उस दायित्व बोध के साथ पूर्णाहुति करायें। सभी संस्कारों में इसी प्रकार का क्रम रहेगा। इस विधा का प्रयोग शान्तिकुञ्ज में शपथ समारोह के साथ प्रारम्भ कर दिया गया है। सूत्रों को दुहराये जाने से संस्कार कराने वालों के अन्तस् में अधिक उमंगें भी उठती हैं और सिद्धांतों को समझने-याद रखने में सुविधा होती है।

— ब्रह्मवर्चस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुंसवन संस्कार

(१) औषधि अवघ्राण- गर्भिणी दोनों हाथों में औषधि की कटोरी लेकर निम्नांकित सूत्रों का भाव समझते हुए, उन्हें दुहराये और इष्ट का ध्यान करे-

सूत्र- (क) ॐ दिव्यचेतनां स्वात्मीयां करोमि। (हम दिव्य चेतना को आत्मसात् कर रहे हैं।)

(ख) ॐ भूयो भूयो विधास्यामि। (यह क्रम आगे भी बनाये रखेंगे।) गर्भिणी औषधि को सूँघे, उस समय मंत्र बोला जाय-

मंत्र- ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नऽ आसुव॥

(२) गर्भपूजन- घर की वयोवृद्ध महिला अथवा गर्भिणी का पति अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराये-

सूत्र- ॐ सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये। (नवागन्तुक को सुसंस्कृत और समुन्नत बनायेंगे।)

सूत्र पूरा होने पर गायत्री मंत्र बोलते हुए वह पुष्प-अक्षत गर्भिणी के हाथ में दिया जाये, वह उसे अपने उदर से स्पर्श कराकर पूजा वेदी पर अर्पित करे।

(३) आश्वात्सना- पति, पत्नी के कंधे पर दाहिना हाथ रखे। सभी परिजन उस ओर हाथ उठायें, उनसे नीचे लिखे सूत्र दुहरवायें-

सूत्र- (क) ॐ स्वस्थां प्रसन्नां कर्तुं यतिष्ये। (गर्भिणी को स्वस्थ और प्रसन्न रखने के लिए प्रयत्न करेंगे।)

(ख) ॐ मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि। (परिवार में कलह और मनोमालिन्य न उभरने देंगे।)

(ग) ॐ स्वाचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि। (अपना आचरण-व्यवहार अनुकरणीय बनायेंगे।)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूत्र पूरे होने पर प्रतिनिधि उन सब पर अक्षत-पुष्प छिड़कें और यह मन्त्र बोलें-

मन्त्र- ॐ स्वस्ति! ॐ स्वस्ति!! ॐ स्वस्ति!!!

यहाँ यज्ञ-दीप यज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(४) चरु प्रदान- गर्भिणी दोनों हाथों में खीर की कटोरी पकड़े, मंत्र बोलने के बाद मस्तक से लगाये और उसे रख ले। बाद में उसे प्रसाद रूप में खा ले।

मन्त्र- ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

(५) संकल्प एवं पूर्णाहुति-परिवार के प्रमुख परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प-जल लेकर संकल्प सूत्र दुहराते हुए पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें।

संकल्प मन्त्र- अद्य.....गोत्रोत्पनः .....नामाहं पुंसवन संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा अन्तर्गते-

दिव्यचेतनां स्वात्मीयां करिष्ये, सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये, स्वस्थां प्रसन्नां कर्तुं यतिष्ये, मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि, स्वाचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

हाथ के अक्षत-पुष्प को पूर्णाहुति मंत्र बोलते हुये दीपक की थाली में एक स्थान पर चढ़ाया जाये। (शेष आरती आदि का क्रम समय के अनुसार संक्षिप्त या विस्तृत रूप में सम्पन्न कर लिया जाये।)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नामकरण संस्कार

(१) मेखला बन्धन- माता या पिता अपने हाथ में मेखला (बनी हुई करधनी या कलावा) लें और सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि। (शिशु में स्फूर्ति और तत्परता बढ़ायेंगे।)

शिशु की कमर में सूत्र बाँधते हुए यह मंत्र बोला जाये-

मंत्र- ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

(२) मधुप्राशन-माता चम्मच में शहद लेकर सूत्र दुहराये-

सूत्र- ॐ शिष्टतां शालीनतां वर्धयिष्यामि। (शिशु में शिष्टता-शालीनता की वृद्धि करेंगे।)

शिशु को शहद चटाते हुए यह मंत्र बोला जाये-

मंत्र- ॐ मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

(३) सूर्य नमस्कार - पिता शिशु को गोदी में लेकर सूत्र दुहराये-**सूत्र- ॐ तेजस्वितां वर्धयिष्यामि।** (शिशु की तेजस्विता में वृद्धि करेंगे।)

इसके बाद उसे सूर्य के प्रकाश में ले जायें। इस बीच गायत्री मंत्र का सस्वर पाठ चलायें।

(४) भूमि पूजन-स्पर्श - माता हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराये-**सूत्र- ॐ सहिष्णुं कर्तव्यनिष्ठं विधास्यामि।** (शिशु को सहनशील और कर्तव्यनिष्ठ बनायेंगे।)

सूत्र पूरा होने पर अक्षत-पुष्प पृथ्वी पर अर्पित करें और मन्त्रोच्चारण के साथ शिशु का स्पर्श पृथ्वी से करें-

मंत्र- ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ, इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ ॐ पृथिव्यै नमः।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(५) नाम घोषणा - नाम लिखी थाली पर से आवरण हटाकर प्रतिनिधि शिशु के नाम की घोषणा करें, फिर उसका नाम लेते हुए उद्घोष करायें-

(१) प्रतिनिधि शिशु का नाम लें- (सब कहें) चिरंजीवी हो।
(२) (सब कहें) धर्मशील हो॥
(३) (सब कहें) प्रगतिशील हो॥

(६) परस्पर परिवर्तन-लोकदर्शन- सभी उपस्थित जन सूत्र दुहरायें- **सूत्र - ॐ उपलालनं करिष्यामि-अनुशिष्टं विधास्यामि।**

(शिशु को दुलार देंगे-अनुशासन में रखेंगे।)

तदुपरान्त गायत्री मंत्र बोलते हुए पहले माँ शिशु को पिता के हाथ में दे, पिता घर के सभी सदस्यों-गुरुजनों को दें और वे उपस्थित पड़ौसी आदि परिजनों को दें।

(७) बालप्रबोधन-प्रतिनिधि शिशु को अपनी गोद में लेकर उसके कान के पास बोलें-

(क) भो तात! त्वं ईश्वरांशोऽसि। (हे तात! तुम ईश्वर के अंश हो।) **(ख) मनुष्यता तव महती विशिष्टता।** (तुम्हारी सबसे बड़ी विशेषता मनुष्यता है।) **(ग) ऋष्यनुशासनं पालयेः।**

(जीवन भर ऋषि-अनुशासन का पालन करना।)

यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(८) आशीर्वचन - सभी लोग अक्षत-पुष्प की वर्षा करते हुए आशीर्वाद प्रदान करें। प्रतिनिधि निम्नांकित मंत्र वाक्य बोलें-

भो शिशो! त्वं आयुष्मान् वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।

(९) संकल्प एवं पूर्णाहुति - घर के प्रमुख सदस्य हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर संकल्प सूत्र दुहरायें और पूर्णाहुति मंत्र के साथ दीपक की थाली में चढ़ा दें-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकल्प - अद्य गोत्रोत्पन्नः .....नामाहं नामकरण संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा अन्तर्गते-

स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि, शिष्टतां शालीनतां वर्धयिष्यामि, तेजस्वितां वर्धयिष्यामि, सहिष्णुं कर्तव्यनिष्ठं विधास्यामि, उपलालनं करिष्यामि, अनुशिष्टं विधास्यामि इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये॥

-०-

अन्नप्राशन संस्कार

(१) पात्र पूजन- माता-पिता हाथ में रोली या चंदन लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ सुपात्रतां प्रदास्यामि। (शिशु में सुपात्रता का विकास करेंगे।)अब मंत्रोच्चारण करते हुए अन्नप्राशन के लिए रखी खीर के पात्र पर स्वस्तिक अंकित करें-

मंत्र - ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

(२) अन्न संस्कार - प्रतिनिधि खीर के पात्र को हाथ में लें और सूत्र सबसे दुहरवायें।

सूत्र - ॐ कुसंस्काराः दूरीभूयासुः। (अन्न के पूर्व कुसंस्कारों का निवारण करते हैं।) इसके बाद खीर पर कलश के जल के छींटे लगाते हुए निम्नाङ्कित मंत्र बोलें-

मंत्र- ॐ मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

प्रतिनिधि पुनः खीर में तुलसीदल डालते हुए निम्नांकित सूत्र वाक्य बोलें- **सूत्र - ॐ सुसंस्काराः स्थिरीभूयासुः।** (इसमें सात्त्विक सुसंस्कारों की स्थापना करते हैं।)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ यज्ञ या दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(३) अन्नप्राशन- प्रतिनिधि गायत्री मंत्र बोलते हुए बच्चे को चम्मच से खीर चटायें। सभी लोग समवेत स्वर में गायत्री मंत्र बोलें।

(४) संकल्प एवं पूर्णाहुति-घर के प्रमुख जन हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर संकल्प सूत्र दुहराकर पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें।

संकल्प- अद्य..... गोत्रोत्पन्नः .....नामाहं अन्नप्राशन संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा-अन्तर्गते सुपात्रतां प्रदास्यामि, कुसंस्कारान् दूरीकरिष्यामि, सुसंस्कारान् स्थिरीकरिष्यामि इत्येषां व्रतानां धारणार्थं सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

-०-

मुण्डन (चूडाकर्म) संस्कार

(१) मस्तक लेपन- माता-पिता दूध-दही-जल मिश्रित पदार्थ की कटोरी हाथ में लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ हीनसंस्कारान् निवारयिष्यामि। (बच्चे के हीन संस्कारों का निवारण करेंगे।)

तदुपरान्त मन्त्र बोलते हुए बच्चे के बालों को गीला करें-

मंत्र- ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु , पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

(२) त्रिशिखा बन्धन - माता-पिता हाथ में कलावा लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ बहुमुखं विकासं करिष्ये। (शरीर के साथ मस्तिष्क के बहुमुखी विकास की व्यवस्था बनायेंगे।)

तत्पश्चात् निम्नांकित मंत्रों से क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का ध्यान करते हुए बालों में तीन जगह कलावा बाँधें।

मंत्र- (क) ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्, विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः, सतश्च

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योनिमसतश्च विवः ॥

(ख) ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ꣳसुरे स्वाहा ॥

(ग) ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ, उतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

(३) छुरा पूजन- हाथ में अक्षत, पुष्प, चंदन आदि लेकर छुरे का पंचोपचार पूजन करें-

ॐ गन्धाक्षतं पुष्पाणि धूपं दीपं नैवेद्यं समर्पयामि।

(४) त्रिशिखाकर्त्तन- प्रतिनिधि कैंची हाथ में लेकर सूत्र दुहरवायें- **सूत्र- ॐ दुष्प्रवृत्तीः उच्छेत्स्यामि।** (स्वभावजन्य दुष्प्रवृत्तियों का उच्छेदन करते रहेंगे।) तत्पश्चात् गायत्री मंत्र बोलते हुए कलावा बँधे बालों के तीनों अंश काटें।

(५) नवीन वस्त्र पूजन- माता-पिता हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ संस्कृतिनिष्ठं विधास्यामि। (बच्चे को संस्कृति के प्रति निष्ठावान् बनायेंगे।)

तदुपरान्त यह मंत्र बोलते हुए वस्त्रों पर छिड़कें-

मंत्र- ॐ मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः ॥

(६) मुण्डन कृत्य- गायत्री मंत्र समवेत स्वर में बोलते हुए मुण्डन कृत्य किया जाये।

यहाँ यज्ञ- दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(७) स्वस्तिक लेखन - प्रतिनिधि रोली या चंदन अनामिका अँगुली में लेकर सूत्र दुहरवायें-

सूत्र- ॐ विचारान् संयन्तुं प्रेरयिष्यामि। (बच्चे को विचार संयम के लिए प्रेरित करते रहेंगे।)

तदुपरान्त यह मन्त्र बोलते हुए बच्चे के सिर पर केन्द्र में स्वस्तिक अंकित कर दें-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंत्र- ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

संकल्प एवं पूर्णाहुति- घर के प्रमुख परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प-जल लेकर संकल्प सूत्र दुहरायें, पूर्णाहुति सम्पन्न करें-

(८) संकल्प- अद्य..... गोत्रोत्पन्नः नामाहं चूडाकरण संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणांतर्गते-हीनसंस्कारन् निवारयिष्यामि, संस्कृतिनिष्ठं विधास्यामि, विचारान् संयन्तुं प्रेरयिष्यामि इत्येषां व्रतानां धारणार्थं, संकल्पं अहं करिष्ये।

-०-

शिखा स्थापन संस्कार

(१) शिखा सिंचन - हाथ में दूध मिश्रित जल लेकर सूत्र दुहराकर शिखा को अभिमंत्रित करें।

सूत्र- ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। (परमात्मा हमें तेजस्विता प्रदान करे।) तत्पश्चात् निम्नांकित मंत्रोच्चारण के साथ शिखा का सिंचन करें।

मंत्र- ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

(२) शिखा स्थापन- प्रतिनिधि अथवा उनके सहयोगी कलावा हाथ में लेकर सूत्र दुहरवायें।

सूत्र- ॐ वर्चोऽसि वर्चो मयि धेहि। (परमात्मा हमें वर्चस्वी-शक्ति सम्पन्न बनाये।) तत्पश्चात् गायत्री मंत्र बोलते हुए प्रतिनिधि अथवा उनके सहयोगी शिखा स्थान के बालों को बाँध दें।

(३) शिखा पूजन- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर मन्त्रोच्चारण के बाद शिखा स्थान का पूजन करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंत्र-ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

यहाँ यज्ञ या दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(४) संकल्प एवं पूर्णाहुति- शिखा स्थापन संस्कार कराने वाले सभी लोगों के हाथ में अक्षत-पुष्प-जल देकर संकल्प दुहरवाकर पूर्णाहुति का क्रम सम्पन्न करें-

संकल्प- अद्य गोत्रोत्पन्नः नामाहं शिखा स्थापनसंस्कारसिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवसंस्कृतेः -अनुरूपं स्वचिन्तन-चरित्र-अभ्यासान् विनिर्मातुं उपासना-साधना-स्वाध्याय-सेवानां व्रतानां संकल्पं अहं करिष्ये।

-०-

विद्यारम्भ संस्कार

(१) गणेश पूजन- बच्चे के हाथ में अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें-

सूत्र- ॐ विद्यां संवर्धयिष्यामि। (बच्चे में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का भी विकास करेंगे।) तदुपरान्त मन्त्रोच्चारण के साथ पूजा वेदी पर उसे चढ़वा दें।

मंत्र- ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥

(२) सरस्वतीपूजन- पुनः अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें।

सूत्र- ॐ कलां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि। (बच्चे में कलात्मकता और संवदेनशीलता का विकास करेंगे।) तदुपरान्त मंत्र बोलते हुए उसे पूजा-वेदी पर चढ़वा दें।

मंत्र- ॐ पावका नः सरस्वती, वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) उपकरण पूजन- बच्चे एवं अभिभावकों के हाथ में अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें-

सूत्र- ॐ विद्यासंसाधनमहत्त्वं स्वीकरिष्ये। (विद्या विकास के साधनों की गरिमा का अनुभव करते रहेंगे।) इसके बाद स्लेट, बत्ती, कलम-कॉपी पर मंत्रोच्चारणपूर्वक चढ़वा दें।

मंत्र-ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं,यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

(४) गुरुपूजन - हाथ में अक्षत-पुष्प देकर बच्चे एवं अभिभावकों से सूत्र दुहरवायें- **सूत्र- ॐ आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि।** (शिक्षकों-गुरुजनों के प्रति निष्ठा को सतत बढ़ाते रहेंगे।) मंत्र बोलने के साथ उसे पूजा-वेदी पर चढ़वा दें।

मंत्र- ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

(५) अक्षर लेखन-पूजन- माता-पिता हाथ में बत्ती या कलम लिये हुए बच्चे का हाथ पकड़कर पहले सूत्र दुहरवायें-

सूत्र - ॐ नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि। (बच्चे में नीति के प्रति निष्ठा की वृद्धि करते रहेंगे।) तत्पश्चात् गायत्री मंत्र बोलते हुए **'ॐ भूर्भुवः स्वः'** लिखायें और उस पर अक्षत-पुष्प चढ़वा दें।

यहाँ यज्ञ या दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(६) संकल्प एवं पूर्णाहुति- घर के प्रमुख परिजन तथा बच्चे (जिनका संस्कार हो रहा है)के हाथ में अक्षत-पुष्प-जल देकर संकल्प सूत्र दुहरवायें, तत्पश्चात् पूर्णाहुति का क्रम संपन्न करें।

संकल्प- अद्य ..... गोत्रोत्पन्नः .....नामाहं विद्यारम्भसंस्कारसिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तर्गते- विद्यां संवर्धयिष्यामि, कलात्मकतां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि, विद्यासंसाधनमहत्त्वं स्वीकरिष्ये, आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि, नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञोपवीत संस्कार

(१) मेखला-कोपीनधारण- कलावा या कोपीन दोनों हाथों के सम्पुट में रखकर निम्नांकित सूत्र दुहराकर अभिमंत्रित करें-

सूत्र- ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि। (संयमशील और तत्पर रहेंगे।) अब गायत्री मंत्र बोलते हुए उसे कमर में बाँधें।

(२) दण्डधारण- सूत्र दुहराकर दण्ड को मस्तक से लगाकर अपनी दाहिनी ओर रख लें।

सूत्र- ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि। (गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

(३) यज्ञोपवीत पूजन- दोनों हाथों के सम्पुट में यज्ञोपवीत को लेकर पाँच बार गायत्री मंत्र बोलते हुए, उसमें गायत्री की प्राण-प्रतिष्ठा की जाये।

(४) पंचदेवावाहन- निम्नांकित सूत्र दुहराकर क्रमशः- ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य देवता का यज्ञोपवीत में आवाहन करें। हर बार 'नमः' के साथ यज्ञोपवीत को हाथ के सम्पुट सहित मस्तक से लगा लिया करें।

सूत्र - (क) ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें। **ॐ ब्रह्मा सृजनशीलतां ददातु। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(ख) विष्णु हमें पोषण-क्षमता से युक्त बनावें। **ॐ विष्णुः पोषणक्षमतां ददातु। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(ग) शिव हमें अमरत्व प्रदान करें। **ॐ शिवः अमरतां ददातु। ॐ शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(घ) यज्ञदेव हमें सत्कर्म सिखायें। **ॐ यज्ञदेवः सत्पथे नियोजयेत्। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(ङ) सविता हमें तेजस्वी बनायें। **ॐ सवितादेवता तेजस्वितां वर्धयेत्। ॐ सवित्रे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(५) यज्ञोपवीत धारण- यज्ञोपवीत धारण करने के पूर्व सूत्र दुहरायें-

सूत्र - (क) ॐ गायत्रीरूपं धारयामि। (हम इस यज्ञोपवीत को गायत्री प्रतिमा के रूप में धारण कर रहे हैं।)

(ख) ॐ यज्ञप्रतीकरूपं धारयामि। (हम इसे यज्ञ के प्रतीक रूप में धारण कर रहे हैं।)

(ग) ॐ गुरोः अनुशासनरूपं धारयामि। (हम इसे गुरु के अनुशासन के रूप में धारण कर रहे हैं।) मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत धारण करें।

मन्त्र- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

(६) गुरु पूजन- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराते हुए गुरु चेतना का आवाहन करें-

सूत्र - ॐ परमात्मचेतनां गुरुरूपेण वृणे। (परमात्म चेतना को हम गुरु रूप में वरण करते हैं।)

हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर गुरुसत्ता को नमन करें, मंत्र साथ-साथ बोलें-

मंत्र- ॐ अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥१॥
नमोऽस्तु गुरवे तस्मै, गायत्रीरूपिणे सदा।
यस्य वागमृतं हन्ति, विषं संसारसंज्ञकम्॥२॥
मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धाप्रज्ञायुता च या॥३॥

(७) मंत्र दीक्षा- हाथ जोड़कर सूत्र दुहराते हुए उसके अनुरूप भावनाएँ बनाएँ (क) हम गायत्री महाविद्या में दीक्षित हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुरूप भावनाएँ बनाएँ (क) हम गायत्री महाविद्या में दीक्षित हो रहे हैं। (ख) गुरु का प्राण, तप और पुण्य हमें प्राप्त हो रहा है। (ग) हम उसे अपने अन्दर धारण कर रहे हैं।

इसके बाद गायत्री मंत्र का एक-एक अक्षर तीन बार दुहरवायें।

(८) सिंचन अभिषेक- मंत्रोच्चारण के साथ कलश का जल दीक्षित होने वालों पर छिड़का जाये-

मंत्र- ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः, तानऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥१ ॥

ॐ यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥२ ॥

ॐ तस्मा ऽअरं गमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो-जन यथा च नः ॥३ ॥

(९) व्रतधारण- सूर्य उपस्थान की तरह हाथ उठाकर पाँच देवताओं की साक्षी में व्रत धारण का संकल्प लिया जाये। 'नमः' के साथ दोनों हाथ जोड़ते हुए मस्तक से लगा लें।

क ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।

ख . ॐ सूर्य ! व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।

ग . ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।

घ ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।

ङ. ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

यहाँ यज्ञ या दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें ।

(१०) गुरुदक्षिणा संकल्प- हाथ में पुनः अक्षत-पुष्प-जल देकर सूत्रानुसार भाव भूमिका बनायें, तत्पश्चात् संस्कृत शब्दावली का संकल्प दुहरायें-

क- हम गुरु अनुशासन में नियमित उपासना करेंगे।

ख- हम गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए नियमित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ग- हम गुरु ऋण एवं देव ऋण से उऋण होने के लिए नियमित आराधना के निमित्त समय और साधनों का एक अंश लगायेंगे।

संकल्प- अद्य .....नामाहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं मम कायिक -वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात-सकलदोषनिवारणार्थं, आत्मकल्याण-लोककल्याणार्थं, गायत्री महाविद्यायां श्रद्धापूर्वकं दीक्षितो भवामि। तन्निमित्तकं युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परम पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्येण, वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मणा च निर्धारितानि अनुशासनानि स्वीकृत्य, तयोः प्राण-तपः-पुण्यांशं स्वान्तःकरणे दधामि, तत्साधयितुं च समय-प्रतिभा-साधनानां एकांशं ..... नवनिर्माणकार्येषु प्रयोक्तुं गुरुदक्षिणायाः संकल्पं अहं करिष्ये॥

संकल्प के बाद हाथ के अक्षत, पुष्प को पूज्य गुरुदेव के चित्र के समक्ष चढ़ा दें।

नमस्कार - हाथ जोड़कर देव मंच तथा समस्त उपस्थित-जन समुदाय को नमस्कार करें।

ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटी युगधारिणे नमः॥

वानप्रस्थ (प्रव्रज्या) संस्कार

(१) **यज्ञोपवीत पूजन**- दोनों हाथों के सम्पुट में यज्ञोपवीत को लेकर पाँच बार गायत्री मंत्र बोलते हुए, उसमें गायत्री की प्राण-प्रतिष्ठा की जाय।

(२) **पंच देवावाहन**- निम्नांकित सूत्र दुहराकर क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य देवता का यज्ञोपवीत में आवाहन करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'नमः' के साथ यज्ञोपवीत को हाथ के सम्पुट सहित मस्तक से लगा लिया करें।

सूत्र- (१) ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें। **ॐ ब्रह्मा सृजनशीलतां ददातु। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(२) विष्णु हमें पोषण-क्षमता से युक्त बनावें। **ॐ विष्णुः पोषणक्षमतां ददातु। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(३) शिव हमें अमरत्व प्रदान करें। **ॐ शिवः अमरतां ददातु। ॐ शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(४) यज्ञदेव हमें सत्कर्म सिखायें। **ॐ यज्ञदेवः सत्पथे नियोजयेत्। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(५) सविता हमें तेजस्वी बनायें। **ॐ सवितादेवता तेजस्वितां वर्धयेत्। ॐ सवित्रे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।**

(३) यज्ञोपवीत धारण- इसके बाद मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत धारण करें-

मन्त्र- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

(४) मेखला-कोपीन धारण- कलावा या कोपीन दोनों हाथों के सम्पुट में रखकर निम्नांकित सूत्र दुहराकर अभिमंत्रित करें-

सूत्र-ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि। (संयमशील और तत्पर रहेंगे।) अभिमंत्रित कलावे को गायत्री मंत्रोच्चारण करते हुए कमर में धारण कर लें।

(५) दण्डधारण- सूत्र दुहराकर दण्ड को मस्तक से लगाकर अपनी दाहिनी ओर रख लें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूत्र- ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि। (गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

(६) पीतवस्त्र धारण- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ अहन्तां उत्सृज्य विनम्रतां धारयिष्ये। (अहन्ता को त्यागकर विनम्रता अपनाऊँगा।) इसके बाद गायत्री मंत्र बोलते हुए पीले वस्त्र के प्रतीक रूप में पीला दुपट्टा धारण कर लें।

(७) त्रिदेव पूजन- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें और त्रिदेव-देव, ऋषि एवं वेद का आवाहन करें-

सूत्र- (क) देव- ॐ साधना-उपासना-आराधनैः देवत्वं वर्धयिष्यामि।

(उपासना,साधना और आराधना के सहारे देवत्व की ओर बढ़ूँगा।)

(ख) ऋषि- ॐ सामान्यजनमिव निर्वाहं करिष्यामि।

(औसत नागरिक के स्तर के निर्वाह का अभ्यास बनाये रखूँगा।)

(ग) वेद- ॐ ज्ञानक्रान्तेः अनुगमनं करिष्यामि। (विचार क्रांति का अनुगमन करूँगा।) इसके बाद निम्नांकित मंत्रोच्चारण के बाद हाथ के अक्षत-पुष्प को पूजावेदी पर चढ़ा दें-

मंत्र- ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोऽ३म्प्रतिष्ठ॥

(८) व्रतधारण- हाथ में क्रमशः अक्षत-पुष्प लेकर व्रत धारण का सूत्र दुहराकर देवों की साक्षी में उन्हें नमन करते हुए हर बार पूजा वेदी पर चढ़ा दिया जाये-

सूत्र - (क) ॐ आयुष्यार्धं परमार्थे नियोजयिष्ये। (आधा जीवन परमार्थ में लगाऊँगा।)

मंत्र - ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूत्र-(ख) ॐ संयमादर्शयुतं सुसंस्कृतं व्यक्तित्वं रचयिष्ये।

(संयमी, आदर्शयुक्त एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व बनाऊँगा।)

मंत्र -ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।

सूत्र - (ग) ॐ युगधर्मणे सततं चरिष्यामि।

(युग धर्म के परिपालन के लिए सतत गतिशील रहूँगा।)

मंत्र -ॐ सूर्य! व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।

सूत्र - (घ) ॐ विश्वपरिवारसदस्यः भविष्यामि। (विशाल विश्वपरिवार का सदस्य बनूँगा।)

मंत्र -ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।

सूत्र - (ङ) ॐ सत्प्रवृत्तिसंवर्धनाय दुष्प्रवृत्युन्मूलनाय पुरुषार्थं नियोजयिष्ये। (सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन में अपना पुरुषार्थ नियोजित रहेगा।)

मंत्र - ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ व्रतपतये इन्द्राय नमः।

नोटः- यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(९) प्रवज्या- निरन्तर चलते रहने का व्रत ग्रहण करके, खड़े होकर हाथ जोड़े हुए अपने स्थान से देवमंच की ओर तथा अन्य गुरुजनों के समक्ष चलते हुए प्रणाम किया जाये। गुरुजन अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। प्रतिनिधि, चरैवेति-चरैवेति, का सिद्धान्त और मंत्र बोलते जायें।

मंत्र -ॐ कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः। उत्तिष्ठँस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्। चरैवेति-चरैवेति॥ चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम्। सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं, यो न तन्द्रयते चरन्॥ चरैवेति-चरैवेति।

* * * * *

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्मदिवसोत्सव

(१) पंचतत्व पूजन -हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ श्रेयसां पथे चरिष्यामि। (जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर चलायेंगे।) इसके बाद निम्नांकित भाव-भूमिका बनाकर मंत्रोच्चारण के साथ अक्षत-पुष्प पंचतत्वों के प्रतीक पाँच चावल की ढेरियों पर चढ़ा दें।

भावसूत्र - (क) पृथ्वी माता हमें उर्वरता और सहनशीलता दें।

(ख) वरुण देवता हमें शीतलता और सरसता दें।

(ग) वायु देवता हमें गतिशीलता और जीवनी शक्ति प्रदान करें।

(घ) अग्नि देवता हमें तेजस् और वर्चस् प्रदान करें।

(ङ) आकाश देवता हमें उदात्त और महान् बनायें।

मंत्र - ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।

(२) दीप पूजन- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र-ॐ परमार्थमेव स्वार्थं मनिष्ये। (परमार्थ को ही स्वार्थ मानेंगे।) इसके बाद निम्नांकित सूत्र के अनुसार भाव-भूमिका बनाते हुए गायत्री मंत्र बोलते हुए दीप प्रज्वलित करें-

भावसूत्र -

(क) दीपक की तरह हमें अखण्ड पात्रता प्राप्त हो।

(ख) हमें अक्षय स्नेह की प्राप्ति हो।

(ग) हमारी निष्ठा ऊर्ध्वमुखी हो।

(३) ज्योतिवन्दन - हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर भाव-भूमिका बनायें-

(क) अग्नि ही ज्योति है, ज्योति ही अग्नि है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(ख) सूर्य ही ज्योति है, ज्योति ही सूर्य है।

(ग) अग्नि ही वर्चस् है, ज्योति ही वर्चस् है।

(घ) सूर्य ही वर्चस् है, ज्योति ही वर्चस् है।

(ङ) ज्योति ही सूर्य है, सूर्य ही ज्योति है।

इसके बाद मंत्र बोलकर हाथ के अक्षत-पुष्प दीपक की थाली में चढ़ा दें।

मंत्र- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

(४) व्रतधारण- हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र - ॐ महत्त्वाकांक्षां सीमितं विधास्यामि। (हम महत्त्वाकांक्षाओं को संयमित रखेंगे।)

इसके बाद जन्मदिन के शुभ अवसर पर एक बुराई छोड़ने व एक अच्छाई ग्रहण करने के क्रम में संकल्प उद्घोष करते हुए उसकी सफलता हेतु देव शक्तियों को नमन करते चलें-

क- ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ अग्नये नमः।

ख- ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नमः।

ग- ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।

घ - ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।

ङ- ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

यहाँ यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें।

(५) संकल्प एवं पूर्णाहुति - जिनका जन्मदिन है, उन्हें हाथ में अक्षत, पुष्प, जल देकर निम्नांकित सूत्रों का भाव समझाकर दुहरवायें और पूर्णाहुति की प्रक्रिया पूर्ववत् सम्पन्न करें।

संकल्प मंत्र- अद्य ..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहं जन्मदिवसोत्सवसंस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देव दक्षिणान्तर्गते- श्रेयसां पथे चरिष्यामि, परमार्थमेव स्वार्थं मनिष्ये, महत्त्वाकांक्षां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीमितं विधास्यामि-इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

(६) आशीर्वचन- सभी उपस्थित जन अक्षत, पुष्प की वर्षा करके संकल्पकर्त्ता को आशीर्वाद प्रदान करें। प्रतिनिधि मंत्र बोलें-

ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

******

विवाह दिवसोत्सव

(१) ग्रन्थिबन्धन - पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

सूत्र- ॐ द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि। (हम दो शरीर एक प्राण होकर रहेंगे।)

इसके बाद फूल-अक्षत-दूर्वा-हल्दी व द्रव्य इन पाँच वस्तुओं को पति-पत्नी के दुपट्टे में बाँधकर कोई बुजुर्ग महिला अथवा पुरुष ग्रन्थि बन्धन करें। सब लोग गायत्री मंत्र बोलें।

(२) पाणिग्रहण- पति-पत्नी दोनों अपने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराते हुए वैसे ही भाव बनायें-

सूत्र- ॐ परस्परं सम्भावयिष्यामि। (एक दूसरे को सम्मान देंगे और सुयोग्य बनायेंगे।) इसके बाद दोनों मित्र की तरह मंत्रोच्चारण के साथ-साथ हाथ मिलायें।

मंत्र-ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

(३) प्रतिज्ञा-- पति-पत्नी, वर-वधू के लिए निर्धारित प्रतिज्ञाएँ क्रमशः दुहरायें।

(४) सप्तपदी-पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें।

सूत्र- ॐ कुटुंबं आदर्शं विधास्यामि। (परिवार के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वातावरण को आदर्शमय बनायेंगे।)

इसके बाद सात चावलों की ढेरियों पर क्रमशः दोनों एक साथ कदम बढ़ायें, मन्त्र बोलते रहें।

प्रथम चरण- (दायाँ) अन्न वृद्धि के लिए-परिवार के लिए सुसंस्कारी अन्न की व्यवस्था करेंगे।

ॐ परमात्मने नमः।

दूसरा चरण- (बायाँ) बलवृद्धि के लिए-कमजोर नहीं, सशक्त बनकर रहेंगे, एक दूसरे को सशक्त बनायेंगे।

ॐ जीवब्रह्माभ्यां नमः।

तीसरा चरण- (दायाँ) धनवृद्धि के लिए-धन के उत्पादन के साथ उसके सदुपयोग की व्यवस्था बनायेंगे।

ॐ त्रिगुणेभ्यो नमः।

चौथा चरण- (बायाँ) सुख वृद्धि के लिए-ऐसे आचरण बनायेंगे, जिससे परिवार को सुख प्राप्त हो।

ॐ चतुर्वेदेभ्यो नमः।

पाँचवाँ चरण- (दायाँ) प्रजापालन के लिए-आश्रितों को स्वस्थ, समुन्नत और सुसंस्कारी बनायेंगे।

ॐ पंचप्राणेभ्यो नमः।

छठवाँ चरण-(बायाँ) ऋतु अनुसार व्यवहार के लिए-परिस्थितियों के अनुकूल एक दूसरे के मानस (मूड) के अनुरूप व्यवहार करेंगे।

ॐ षड्रसेभ्यो नमः।

सातवाँ चरण- (दायाँ) मित्रता वृद्धि के लिए-परस्पर मित्र भाव बढ़ायेंगे तथा सुसंस्कारी-हितैषी मित्र बनायेंगे।

ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः।

(५) आश्वात्सना- पति-पत्नी एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर सूत्र दुहरायें।

सूत्र- ॐ अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(कर्त्तव्यों को महत्त्व देंगे- अधिकारों की उपेक्षा करेंगे।)

(६) तिलक- पति-पत्नी एक दूसरे के माथे पर तिलक लगायें। भावना करें-एक दूसरे के सम्मान और गौरव के कारण बनेंगे।

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यज्ञ-दीपयज्ञ की प्रक्रिया यहाँ जोड़ें।

(७) संकल्प एवं पूर्णाहुति- पति-पत्नी हाथ में अक्षत-पुष्प-जल लेकर संकल्प के सूत्र दुहरायें और पूर्णाहुति की प्रक्रिया पूर्ववत् सम्पन्न करें।

संकल्प- अद्य .....गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहं विवाह-दिवसोत्सव संस्कार सिद्ध्यर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणान्तर्गते-द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि, परस्परं सम्भावयिष्यामि, कुटम्बं आदर्शं विधास्यामि, अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये॥

(८) आशीर्वचन- इसके बाद सभी समुपस्थित जन पति-पत्नी के ऊपर अक्षत-पुष्प डालते हुए आशीर्वाद प्रदान करें। प्रतिनिधि मन्त्र बोलते रहें-

ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

मुद्रकः युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org